1

हुज़ूर -ए- वारिस

हुजूर -ए- वारिस का मकबरा देवा शरीफ, भारत में

अनुवादक:
मोहम्मद अब्दुल हफीज
अमेज़न किंडल लेखक

2

द्वारा प्रकाशित

© मोहम्मद अब्दुल हफीज

प्रथम प्रकाशित 1446/2024

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनः प्रस्तुत या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या अन्यथा, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

3

रिकॉर्ड पुष्टिकरण <confirmation@indiabookofrecords.in>
10:14 PM (1 घंटा पहले)
लिए, नीरजा, आईबीआर

आवेदन आईडी: 91655

प्रिय मोहम्मद अब्दुल हफीज,

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से शुभकामनाएं!

बधाई हो, इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के तहत 'आईबीआर अचीवर' शीर्षक के रूप में आपका दावा अंतिम रूप से स्वीकार कर लिया गया है। हम आपके द्वारा दिखाए गए प्रयास और धैर्य की सराहना करते हैं। आपके कौशल को स्वीकार किया गया है और 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' के संपादकीय बोर्ड द्वारा किए गए सत्यापन के अनुसार, केवल सर्वश्रेष्ठ का चयन किया गया है और हमारे द्वारा अनुमोदित किया गया है।

शीर्षक और सामग्री हमारे सत्यापन के अनुसार बनाई

4

गई है और नीचे दी गई है। शीर्षक और सामग्री को रिकॉर्ड लेखन के निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार तैयार किया गया है, जिसमें साक्ष्य और बुक रिकॉर्ड्स डेटाबेस के सावधानीपूर्वक सत्यापन के बाद विसंगतियों की कोई गुंजाइश नहीं है। इसलिए, श्रेणी, शीर्षक और विवरण मामले में बदलाव पर विचार नहीं किया जाएगा, साथ ही चूंकि रिकॉर्ड अनन्य है, इसलिए किसी व्यक्ति के रिकॉर्ड में अन्य प्रतिभागियों/समर्थकों/माता-पिता/मित्रों के नाम शामिल नहीं किए जाएंगे।

शीर्षक एवं विवरण

आईबीआर अचीवर
मोहम्मद अब्दुल हफीज (जन्म 10 जनवरी, 1945) को 'आईबीआर अचीवर' की उपाधि दी गई है, क्योंकि उन्होंने एएसएन इस्लामिक बुक्स द्वारा प्रकाशित 'मुस्लिम सेंट्स एंड मिस्टिक्स' (आईएसबीएन: 978-9830653-54-9) नामक एक पूरी किताब का गूगल ट्रांसलेट का उपयोग करके अंग्रेजी से कन्नड़ में अनुवाद किया है, जिसकी पुष्टि 8 अगस्त, 2024 को हुई है।

--

5

`.

मोहम्मद अब्दुल हफीज की पुस्तकें - गुडरीड्स वैश्विक वेब आइकन https://www.goodreads.com/author/list/15034155.Mohammed_ …
पिछला 1 2 3 4 5 6 7 अगला » * नोट: ये सभी पुस्तकें Goodreads पर इस लेखक के लिए हैं। अधिक पुस्तकें जोड़ने के लिए, यहाँ क्लिक करें। मोहम्मद अब्दुल हफीज की Goodreads पर 161 पुस्तकें हैं और उन्हें 309 रेटिंग मिली हैं। मोहम्मद अब्दुल हफीज की सबसे अधिक

6

हज़रत की शान में वारिस अली शाह RA .

आप पैगम्बर के प्रिय लोगों में से एक हैं।
हे राजा, आप विश्व के राजाओं में से हैं।
स्वर्ग का वसंत तुम्हें बहुत पसंद है।
तुम देवा नगर के बसंती रंग हो
उनकी कब्र पर आने वाले व्यक्ति को नमस्कार।
शेख द्वारा मध्यस्थता के लिए पात्र हैं ।
आप वास्तविकता के बारे में सभी रहस्य बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।
तुम सत्य का ज्ञान रखते हो और उसके रहस्यों को जानते हो।
बधाई हो हफीज, आपकी प्रतिष्ठा अच्छी है।
आप देवा के शेख के वफादारों में से हैं।

मोहम्मद अब्दुल हफीज
अमेज़न किंडल लेखक

7

उर्दू पुस्तक का समर्पण

“ उर्दू पुस्तक का समर्पण मेरी फूफी हज्जन के नाम पर किया जाता है मुरादन ने वारिसिया के सूफी सिलसिले से अपना नाता जोड़ लिया है और उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु हजरत मुहम्मद साहब का अनुसरण करने के लिए जीवन भर शादी नहीं की। वारिस अली शाह साहब।”

8

अंतर्वस्तु

i. हुजूर की शान में वारिस ……………………………… 06

ii.प्रस्तावना
……………………………………………………09

iii. हुज़ूर -ए- वारिस की संक्षिप्त जीवनी … … … … … … … … … … 12

1. शिष्टाचार का वर्णन……………………… …………….13

2.प्रेम और भक्ति का एक एल्बम……………………… ……… 13

3.कनेक्शन का दर्पण…….………… …… ….. …...... 34

9

प्रस्तावना

यह पुस्तक, “ हुजूर -ए- वारिस, उर्दू संस्करण, कराची शहर में कमर वारिसी द्वारा वर्ष 1414 हिजरी में प्रकाशित किया गया था। और यह एक नई किताब है, जिसे मेरे द्वारा वर्ष 2024 में प्रकाशित किया गया था, उर्दू पुस्तक का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद। कृपया ध्यान दें कि यह भारत में यूपी में देवा शरीफ के पवित्र संत के बारे में एक जीवनी पुस्तक है, और उनका नाम हजरत के रूप में प्रसिद्ध और प्रसिद्ध है। वारिस अली शाह.
यह एक छोटी सी पुस्तक है जिसमें पवित्र संत की जीवनी जोड़ी गई है, और इस पुस्तक में उत्तर भारतीय क्षेत्र और दुनिया के कुछ कई हिस्सों के इस महान पवित्र संत की कुछ महान उपलब्धियां हैं जो अभी तक आम लोगों को ज्ञात नहीं हैं। इस पुस्तक में बहुत ही रोचक शैली में प्रकाशित किया गया है, इसलिए इस

10

कारण से पाठकों को इस विषय में बहुत रुचि और ध्यान मिलेगा।

उपरोक्त तथ्यों और विवरणों से, यदि पाठक इस पुस्तक के पहले अध्याय को पढ़ना शुरू करेंगे और अंतिम अध्याय तक पहुंचने तक इसे पढ़ना बंद नहीं करेंगे, क्योंकि इस पुस्तक में कुछ दिलचस्प घटनाओं के साथ-साथ पवित्र संत के अन्य महान चमत्कार और प्रयास भी शामिल हैं, और यह पवित्र संत कई शताब्दियों पहले दुनिया से चले गए थे।
यह पुस्तक छोटी होने के बावजूद भी अपने महत्व के कारण बहुत बड़ी है, क्योंकि इसमें बहुत सी रोचक घटनाएं और सकारात्मक जानकारी समाहित है, इसलिए यह पवित्र संत के ज्ञान और जानकारी के सागर के समान है, जो विदेशी धरती पर इस्लाम के प्रचार और प्रसार के लिए अपने महान प्रयासों और कई कठिन कार्यों को करने के बाद दुनिया से चले गए। इसलिए यह पुस्तक छोटी है, लेकिन यह लोगों को इस्लाम के सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन के लिए ज्ञान और जानकारी का आंनद प्रस्तुत करेगी।
रहस्यवादियों' (तधकीरताल) के अनुसार संपादित और स्वरूपित है अल- अवलिया फ़रीद अल दीन अत्तार द्वारा लिखित, जो पश्चिमी दुनिया में अंग्रेज़ी जानने वालों के बीच बहुत प्रसिद्ध है। इसलिए इस कारण उर्दू पुस्तकों और उसके साहित्य की तुलना करते समय इसमें कुछ छोटे-मोटे अंतर होंगे। इस पुस्तक का उद्देश्य पश्चिमी दुनिया में प्रस्तुत करना है जहाँ सूफीवाद की पुस्तकों और पवित्र संतों की जीवनियों की बहुत खोज और मांग है, जिन्होंने अल्लाह के अंतिम पैगंबर की परंपरा और

11

व्यवहार के अनुसार दुनिया के सभी कोनों में इस्लामी धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए अपना पूरा जीवन बिताया।
उत्तर भारतीय क्षेत्र के इस महान संत के बारे में लिखना न केवल कठिन है बल्कि यह बहुत कठिन कार्य है क्योंकि वे न केवल उत्तर भारतीय क्षेत्र में अपने समय के महान पवित्र व्यक्तित्व थे बल्कि वे उत्तर भारत क्षेत्र में अपने समय के महान पवित्र संत भी थे और उनके व्यक्तित्व की उपस्थिति के कारण जो कई शताब्दियों पहले उत्तर भारतीय क्षेत्र, भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ दुनिया के कुछ हिस्सों में इस्लाम के प्रचार और प्रसार का एक प्रमुख कारण था, इसलिए संक्षेप में वे इस क्षेत्र के एक महान मुस्लिम संत थे और जिन्होंने उपमहाद्वीप भारत और तुर्की में इस्लाम के प्रचार और प्रसार के लिए कई महान प्रयास किए और उनके समय में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं था। उनके शिक्षण और प्रचार करने वाले देशों के अन्य सभी विवरण इस छोटी सी पुस्तक में मिलते हैं।

1. हुजूर -ए- वारिस

حضورِ وارث
3624
891.431
قمر وارثی

[illegible]

[illegible]
[illegible]

13

1. शिष्टाचार का वर्णन

यद्यपि पवित्र व्यक्तियों की कठिन घटनाएँ और उनकी परिस्थितियाँ और उनके प्रभाव और उनके चमत्कार थे, और उन घटनाओं को रिकॉर्ड करना किसी भी साधारण व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। और यदि कोई ऐसी नज़र है जो किसी को भी पता होगी, तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसने पवित्र व्यक्ति की मूल स्थिति और स्थिति को जान लिया है। विशेष रूप से इस मामले में पूर्ण पवित्र व्यक्ति के बारे में लिखना। और इसमें कठिन निरीक्षण होंगे, और यह वह है जिसे बड़े-बड़े पवित्र व्यक्ति समझ नहीं पाए। पवित्र व्यक्तियों पर जो स्थिति थी, और दूसरी बात, उस जगह से इस मामले में कोई संभावित परिणाम नहीं होगा।

तो जो पवित्र लोग जन्म से सिद्ध होंगे और जिनकी वंशावली का सम्बन्ध होगा, उनके बारे में सिर्फ़ यही कहा जा सकता है कि जीवन काल में उनकी क्या स्थिति थी और उसके बाद क्या स्थिति होगी। और इस मामले में मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक से और कुछ निरीक्षण से भी इस मामले में प्रकाश डाल सकता है। उपरोक्त पवित्र व्यक्तियों के उत्तराधिकारी, वंशावली सम्बन्धी पवित्र संत और सिद्ध आध्यात्मिक गुरु हज़रत वारिस अली शाह, कुछ कहने के लिए और कुछ बातें लिखने के लिए और कुछ भावना का हिस्सा, जो विचारों और घटनाओं पर निर्भर करेगा।

हजरत सरकत वारिस पाक उन सब में से एक ऐसी शख़्सियत है और मैं उन्हें इस मामले में हज़ार कोशिशों से

14

भी नहीं समझ पाया और जो उनकी कायनात की दुनिया में उनकी काबिलियत में पाई जाती हैं और जिसके बाद रोज़मर्रा की ज़िंदगी में जो होगा और उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि एक ग़ुलाम की शक्ल में दुनिया के कामों को चलाने के लिए एक शख़्सियत मिलेगी जो इस मामले में अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर की गई है। इस ग़ुलाम की पहुँच ऐसी है कि उसने सब कुछ समझ लिया है लेकिन फिर भी कुछ नहीं समझता। और इस मामले में आगे कुछ कहना अदब के मुताबिक़ अच्छा नहीं है। और हो सकता है कि इस ग़ुलाम ने अदब की हदें पार कर ली हों। तो सैकड़ों सलामों के साथ यह ग़ुलाम इस मामले में अपनी सोच के इज़हार का सिलसिला बंद कर रहा है।

मनक़िबत (प्रशंसा) के रूप में कविता के रूप में उल्लेख किया है और कई स्थानों पर प्रकाश डाला है, जिससे लोगों को लाभ होगा। समझिए कि सरकार वारिस अली शाह और उनके प्रयास इस मामले में बहुत सफल हैं।

वारिस शाह के चरणों की धूल
अली सलीम गुल मोहम्मद वारसी

2.प्रेम और भक्ति का एक एल्बम

15

उर्दू साहित्य में ग़ज़ल एक कठिन श्रेणी है और इसी तरह नात भी एक कठिन प्रकार है, जैसे मनक़िबात (प्रशंसा) लिखना भी बहुत कठिन है।

कठोरता के साथ ग़ज़ल में इस मामले में बहुत आसानी है। कल्पना या वास्तविकता के प्रिय की प्रशंसा होगी, जो संकेत और रूपक में की जाएगी और नत में एक व्यक्तित्व और इकाई की प्रशंसा होगी और इस मामले में उनके साथ लगाव का वर्णन होगा। और जिसके साथ बहुत अधिक भक्ति दिखाई जाएगी । अगर हम नबी-हुकूमत और संतत्व के लक्ष्य को देखें, और अगर हम एक नज़र से देखें, तो हम नात और मनक़बत के बीच अंतर नहीं समझ सकते। कवियों के लिए नात और मनक़िबत लिखना इस मामले में एक कठिन और मुश्किल काम है।

कमर वारसी ने इस बात का बहुत ध्यान रखा है ।

समीक्षा से पता चलता है कि मनक़िबत कविता और अनुरोध को पूरा करने के लिए निर्धारित पंक्ति के अनुसार लिख रहा है। श्रृंखला के लोग आध्यात्मिक गुरुओं के अनुयायियों और भक्तों से संबंधित हैं। उनके मनक़बत में, दिलों की बात होगी और उनके जीवन की मदद भी होगी और भक्ति और सत्य की प्रमाणिकता का वर्णन होगा। जो लोग मनक़िबत लिखते हैं और जो गैर-वंशीय व्यक्ति हैं और उनकी कविताएँ केवल औपचारिकता होंगी और केवल कविता प्रकार की होंगी।

मनक़िबत पढ़ने पर पता चलता है कि उनका लहजा ज़ंजीर का है और सूफ़ी उस्तादों से उनका गहरा रिश्ता है और उनकी मनक़िबत में इस मामले में सच्चाई का आईना मिलेगा।

16

मुंक़बतों में जो हाजी वारिस अली शाह की प्रशंसा में उनकी पवित्रता के संदर्भ में लिखे गए थे, सभी मनक़बतों को ' हुज़ूर -ए- वारिस ' पुस्तक में जोड़ा गया है जो इस मामले में प्रेम और भक्ति का एक एल्बम है।

रशीद अंजुम
क्वेटा

वारिस की मौजूदगी में कमर वारिसी के शब्द

इस्लामी दर्शन का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि पैगम्बर के काल से लेकर अब तक हमारे इस्लामी विधिवेत्ताओं और विद्वानों ने इस्लामी शिक्षा के विषय पर पत्रिकाएं और पुस्तकें लिखी हैं और उन पुस्तकों के पृष्ठों की संख्या लाखों में होगी। पवित्र सूफी संतों ने शिक्षा के बारे में समूह बनाए और उसका उद्देश्य, संक्षेप में, प्रेम के एक शब्द से भरा हुआ था।
सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले विद्वान लोगों की शिक्षा का उद्देश्य संक्षिप्त है: अल्लाह की निकटता में, प्रेम का स्थान और स्थिति, रहस्यवाद या अच्छे व्यवहार के चरण प्रेम और प्रेम के भाग से संबंधित हैं। इतिहास और यात्रा की पुस्तकें इस मामले में गवाह हैं और प्रत्येक काल में सूफी संतों की शिक्षाओं का अनुसरण करने पर सच्चाई के विद्यार्थी उच्च श्रेणी के स्थानों और पदों तक पहुंचे और पाए।
इस सच्चाई से कोई इंकार नहीं कर सकता कि 19 वीं सदी जो कि धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण थी और इस सदी में समाज के हर

17

छोटे-बड़े वर्ग में द्वेष और दुश्मनी की दीवारें खड़ी थीं, लेकिन अल्लाह बहुत बड़ा कारणकर्ता है और जिसे समय के कुतुब हजरत हाजी हाफिज वारिस शाह ने इस भ्रम और गलतफहमी की सदी में दुर्भावना की दीवारों को खत्म करने के लिए भेजा है, उस पर रहमत और दया की वर्षा की है और उसके माध्यम से प्रेम की एक ऐसी कड़ी स्थापित की है, जिसमें दुखी मानवता के लिए एक इलाज है और जिसमें सभी समस्याओं और कठिनाइयों के साथ-साथ छिपे हुए दर्द और चोट का इलाज है।
हज़रत मुहम्मद साहब के पूरे जीवन काल में वारिस कुरान और पैगम्बर की सुन्नत पर अमल करने में खर्च किया गया है। और कुदरत के दीन का भी बहुत जोश से पालन किया गया है, जो इस मामले में इसका आईना है। हज़रत ने समाज में मानवीय मनोविज्ञान को बनाए रखते हुए, मुसलमान व्यक्ति की बुद्धिमता और बातचीत और भाषण की अच्छी शैली के साथ पैगम्बर के शाश्वत संदेश को प्रतिपादित किया है। और इस तरह, बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी टिप्पणी या आपत्ति के, उसे आम लोगों तक पहुंचाया है, आम लोगों के सीने गरम किए हैं और उन्हें अल्लाह की वास्तविकता और ज्ञान दिखाया है। और समाज से मतभेद और भ्रम की दीवारों को गिरा दिया है और उन्हें केंद्रीयता के मार्ग की ओर पहुँचाने में सक्षम बनाया है।
हजरत वारिस अली शाह की जन्म तिथि 1234 हिजरी है। और जन्म स्थान भारत में उत्तर प्रदेश के देवा शरीफ है। उनके पूर्वज सैयद अशरफुद्दीन ईरान के नेशापुर शहर से ताल्लुक रखते हैं । और जो ईरान से

18

भारत चले आए और उत्तर भारत में उत्तर प्रदेश के बारा बांकी जिले के रसूलपुर गांव में बस गए।
और कुछ समय बाद, उन्हें देवा गांव में स्थानांतरित कर दिया गया। उनका सही आनुवंशिक लिंक सादात (सादात (अरबी: سادات (एक प्रत्यय है, जो इस्लामी पैगंबर मुहम्मद के वंशज माने जाने वाले परिवारों को दिया जाता है ।) काज़मी व्यक्तियों के साथ जुड़ा हुआ है और हज़रत अली इब्न तालिब आरए के साथ वंशावली रिकॉर्ड से जुड़ा हुआ है, और उनके पिता का नाम हज़रत अली इब्न तालिब आरए है। कुर्बान अली शाह और उनकी माँ का नाम सकीना बीबी उर्फ चाँद बीबी है।
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के पवित्र जीवन की समीक्षा वारिस अली शाह ने दिखाया कि उनके जीवन का हर पहलू इस मामले में पैगम्बर के जीवन का अनुसरण करके चमकता है। हज़रत खुद दूसरे लड़कों की तरह खेलकूद और मनोरंजन में रुचि नहीं लेते थे। हज़रत जब छोटे थे, तभी उनके माता-पिता इस दुनिया में चले गए थे। उनकी दादी ने उनकी और उनकी शिक्षा व्यवस्था की देखभाल की, जो हज़रत की उम्र पाँच साल की उम्र में शुरू हुई थी। और उन्होंने 7 साल की उम्र में कुरान को याद कर लिया था। उनके शिक्षक उनकी प्राकृतिक प्रतिभा और क्षमता को देखकर आश्चर्यचकित थे । हज़रत अपने सहपाठियों और अपने शिक्षकों को प्रेम का पाठ पढ़ाते थे।
हज़रत अक्सर गाँव की सीमा से बाहर जाते थे और यह देखकर उनकी दादी ने उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। कुछ देर बाद जब कमरा खोला गया तो उनकी दादी उन्हें कमरे में नहीं पायीं और ढूँढने पर वे

19

बगीचे में मिले। और उस दिन के बाद से उनकी दादी उन पर कोई और रोक या नियंत्रण नहीं लगा सकीं।
अपनी दादी की मृत्यु के बाद, हज़रत स. वारिस शाह अपने रिश्ते में बहनोई कादिम अली शाह के साथ लखनऊ चले गए और वहीं पर उनकी शिक्षा-दीक्षा जारी रही। जब उन्हें 12 वर्ष की आयु में ज्ञान की प्राप्ति हुई तो वे एकांत में रहने लगे और फिर वे गांव से दूर-दूर जाकर पूजा-पाठ, रहस्यमयी क्रियाकलाप और साधना में लग जाते थे। जब कादिम अली शाह ने उनके प्रयासों को देखा तो उन्हें कादरिया के सूफी सिलसिले में शामिल कर लिया और उनकी प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली। और उन्हें अपनी खिलाफत भी प्रदान की। हज़रत की मृत्यु की तिथि क़ादिम अली शाह का जन्म 1253 हिजरी वर्ष के 11 वें सफ़र महीने में हुआ था । उनकी मृत्यु के तीसरे दिन हज़रत के सभी शिष्यों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मामले में शर्त स्वीकार करने पर कादिम अली शाह को उनकी श्रेष्ठता और ज्ञान के कारण पगड़ी पहनाई गई। मदीना में पैगम्बर की मजार पर गये ।
वह 11 तारीख को हज यात्रा के लिए रवाना हुए। रब्बिल थानी और खाजा की कब्र का दौरा किया मोइनुद्दीन अजमेर में चिसीती का मकबरा बनाया गया। और वहाँ से हज़रत बम्बई चले गए और वहाँ 15 दिन रहकर जहाज़ के सफ़र से जेद्दा के लिए रवाना हो गए। और यमन में जहाज़ से उतरकर हज़रत की मज़ार की ज़ियारत करने गए वहां से वह पैदल ही जेद्दा पहुंचा और वहां से वह क़रनी के ओवैस के पास पहुंचा।
और 29 शाबान को वह पवित्र मक्का की सीमा में पहुँच गए। और तीन महीने की अवधि तक रहने के बाद, उन्होंने हज की यात्रा की। और फिर वह मदीना शहर

20

गए। और वह वहाँ तीन महीने तक रहे, और पैगंबर की अदालत से अनुमति प्राप्त करने के बाद, वह नजफ़, करबला, मशहद और बगदाद शहरों की यात्रा करने गए। और दुनिया से गुज़र चुके पवित्र व्यक्तियों से अनुग्रह प्राप्त करने के बाद, वह वापस मक्का पहुँचे और दूसरी बार हज की यात्रा की।
वारिस पाक ने कितने हज यात्रियों को किया है जिसमें अंतर है? इस मामले में कुछ पवित्र लोगों ने 17 और कुछ ने 12 बताया है।
वारिस पाक की कृपादृष्टि के कारण न केवल भारत और पाकिस्तान उपमहाद्वीप में बल्कि यूरोप और अन्य महाद्वीपों में भी बड़ी संख्या में लोग उनकी कृपादृष्टि से लाभान्वित हुए । वारिस पाक 12 साल की अवधि तक अपनी यात्रा में लगे रहे। और अपनी यात्रा में उन्हें ईश्वर की एकता और पैगम्बरियत का संदेश दिया गया। तुर्की राज्य के सुल्तान अब्दुल हमीद खान ने उनके हाथों पर वचन लिया और बड़ी संख्या में तुर्की लोग उनके शिष्य बन गए। जर्मनी और फ्रांस में इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार और उनके शिक्षण और उपदेश कार्य के लिए उनके प्रयासों की कड़ी। कई पर्यटकों ने बताया है कि दूर-दूर के इलाकों और घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ी इलाकों में तीर्थयात्रियों की वेशभूषा में उनके शिष्य पाए गए।
यहाँ यह बताना उचित होगा कि भारत में उनके शिष्यों में बड़ी संख्या में हिंदू पुरुष और महिलाएँ थीं। इनमें कलेक्टर, बैरिस्टर, जज, राजा और महाराजा तथा निम्न जाति के लोग शामिल हैं। हज़रत मुहम्मद साहब के उर्स (पुण्यतिथि) में वारिस पाक में मुस्लिम श्रद्धालुओं की तुलना में

21

हिंदू व्यक्तियों की संख्या अधिक पाई जाती है । तथा वे ईमानदारी और भक्ति का परिचय देते हैं। उनकी आध्यात्मिक शक्ति के प्रभाव से कई हजार हिंदू लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है। हज़रत वारिस पाक कभी किसी को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए नहीं कहते थे। साथ ही इस मामले में कभी किसी से धार्मिक चर्चा नहीं करते थे। उनकी चर्चा प्रेम मामलों की तरह होती थी। इस प्रेम में संकेत और प्रतीक की शैली में। हजरत कुछ ऐसा कहते थे जो सबसे ज्यादा प्रभावी होता था, इसलिए इस कारण गैर-मुस्लिम व्यक्ति असहज हो जाते थे और बिना किसी प्रयास और आंदोलन के इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेते थे। अलीगढ़ के एक वकील ऐसे ही मुसलमान व्यक्ति थे, और इस मामले में कई हजार मुस्लिम विद्वान और विद्वान व्यक्ति उनकी भक्ति और धर्मपरायणता से ईर्ष्या करते थे।
वारिस सरकार के हाथों बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने, और अगर उनमें से कई लाख नहीं भी हुए, लेकिन यह निश्चित है कि आर्य समुदाय के कई हजार लोग इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले थे। उनके उपदेश में सबसे बड़ी बात उनकी अंतरात्मा की शक्ति है। और इस स्रोत से बीमार व्यक्ति स्वस्थ और तंदुरुस्त हो जाएंगे। और गरीब लोग अमीर बन जाएंगे। लोगों की इच्छा पूरी होगी। हज़रत को प्रेम और भाईचारे का ऐसा पाठ दिया गया और ऐसा मार्गदर्शन दिया गया, तो इस कारण से लोग उनकी श्रृंखला में शामिल हो गए और जो नफरत और घृणा को भूल जाते हैं और अनदेखा कर देते हैं। और हज़रत ने शिष्यों को ऐसा रंग दिया कि वे इस मामले में जाति और धर्म को भूल गए और साथ ही साथ कोई वाम-धार्मिक भेदभाव भी नहीं था। हज़रत

22

वारिस सरकार कहते थे कि “जो व्यक्ति हमसे प्रेम करता है, वह हमारा है।” हज़रत ने विभिन्न धर्मों के लोगों को अपने दायरे में शामिल किया और उन्होंने कहा है कि ईश्वर की एकता के कई रास्ते हैं और सभी धर्मों की नींव सत्य और ईश्वर को जानने पर है।”
वारिस अली शाह साहब को देखेगा, वह इस मामले में हमेशा के लिए उनका दीवाना हो जाएगा। उनके शरीर में बिजली की दौड़ती धाराओं के समान प्रभाव होगा और उनकी आँखों में अल्लाह की रोशनी होगी। इसलिए जो लोग उन्हें देखेंगे, वे इस मामले में आश्चर्यचकित होंगे। उन्होंने इस मामले में अपनी आँखों और दिल की रोशनी से इस्लाम धर्म का प्रचार बहुत हद तक किया है। अपनी महानता और महानता के कारण, उन्होंने लोगों के दिलों पर कब्ज़ा कर लिया है। और अपनी अंतरतम शक्ति के कारण उन्होंने लोगों के जुनून के साथ-साथ लोगों के दिमाग को भी बदल दिया है। और भावनाओं और तरीके में भी बदलाव होते हैं। अपनी उच्च आध्यात्मिक शक्ति के कारण, उन्होंने लोगों की सोचने की शक्ति को इस्लामी धर्म की ओर मोड़ दिया। उन्होंने अपनी घोषणा के द्वारा हर जगह अल्लाह की एकता और पैगंबर के संदेश का प्रकाश फैलाया है। इस प्रकार, जब वे इबादतगाहों और दूसरे धर्मावलंबियों के स्थानों पर जाते हैं, तो उन्हें वहाँ वास्तविकता का प्रकाश दिखाया है। वह न तो प्रचारक थे और न ही मिशनरी, बल्कि वह भाषण देने में कम सक्षम व्यक्ति थे। हज़रत मुहम्मद साहब की आँखों की रोशनी के चमत्कार थे। वारिस शाह साहब... और जहां इसकी नज़र

23

होगी, उस वक़्त वहां मोहब्बत करने वालों का जमावड़ा होगा।
बचपन से ही वे इबादत और दीन के कामों के पाबंद थे। और जवानी आने से पहले हज़रत हर महीने तीन दिन का रोज़ा रखते थे। और उसके बाद उन्होंने हर महीने एक हफ़्ते का रोज़ा रखना शुरू कर दिया। हज़रत ने निम्नलिखित जगहों का दौरा किया,
1. तोरा पर्वत 2. फरान पर्वत 3. गुफा थुर 4. गुफा हिरा 5. अराफात पर्वत
उपरोक्त सभी स्थानों पर उनका आगमन हुआ है। चिल्ला-नाशिनी, सूफीवाद में तपस्या और एकांत की एक आध्यात्मिक प्रथा है, जो ज्यादातर भारतीय और फारसी परंपराओं में जानी जाती है।
इस अनुष्ठान में एक भिक्षुक या तपस्वी कुछ समय तक अरबाईन की नकल करते हुए 40 दिन और रात बिना भोजन के ध्यान तकनीकों का अभ्यास करते हुए एक घेरे में बैठने का प्रयास करता है HYPERLINK "https://en.wikipedia.org/wiki/Arba%27een" \o "Arba'een" और वहां प्रयास करता है।
पैगम्बर मुहम्मद की मस्जिद अक्सा में, नज्फ़ और करबला में उन्होंने लम्बे समय तक चिल्ला-नशीनी की है।
सरकार वारिस शाह सब्र, भरोसा और संतोष की गरिमा में उत्कृष्टता की मिसाल थे। वह एक अमीर परिवार के सदस्य थे, लेकिन उन्होंने इस मामले में कभी भी पैसे को हाथ नहीं लगाया। और उन्होंने किसी व्यक्ति से कुछ भी स्वीकार नहीं किया और अहराम (हज तीर्थयात्री पोशाक), जो उनके शरीर पर पाया जाएगा, जो किसी भी शुभचिंतक द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा । उन्होंने अपना पूरा जीवन अविवाहित शैली

24

में बिताया है। उन्होंने शादी नहीं की, और जीवन का यह आकर्षण उन्हें इस मामले में लुभा नहीं सका। हज़रत अपने दाहिने करवट सोते थे और अपने सिर के नीचे तकिया का इस्तेमाल नहीं करते थे। और बैठने- उठकने की शैली का उपयोग करते थे और अपने हाथों को धरती पर रखते थे।
हजरत वारिस पाक सभी से हंसकर बात करते थे। और उनकी जुबान में हल्की हकलाहट थी। और इसी वजह से उनकी बातचीत में शब्द बोलने से आकर्षण बढ़ता था। हंसी- मजाक के लिए वे धीरे-धीरे हंसते थे। अपने नौकरों के साथ उनका व्यवहार अच्छा और सामान्य था। और वे छोटों से प्यार जताते थे और बड़ों को खड़े होकर सम्मान देते थे। और उनका नाम आदर और सम्मान के साथ लेते थे। सलाम कहने के लिए वे इस मामले में पहले प्रयास करते थे। नए आने वाले के साथ वे आगे बढ़कर उससे हाथ मिलाते थे।
शहर से बाहर आने वाले शिष्यों के साथ, वह उनके सम्मान में खड़ा होगा और उन्हें अपने पास लाएगा, उन्हें अपने सीने से लगाएगा, और अपनी उपस्थिति में आगंतुकों के परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लेकर उनका हालचाल पूछेगा। सभी लोगों के साथ उनका व्यवहार एक जैसा और समान था। उनके मिलने की जगह में अंतरंग और अन्य व्यक्तियों के बीच कोई अंतर नहीं है। सभी लोगों पर उनकी ऐसी कृपा और दया होगी कि सभी इस मामले में गर्व महसूस करेंगे। जब दूसरे गुरुओं के शिष्य उनकी उपस्थिति में आते हैं, तो उस समय वह उन पर विशेष ध्यान देंगे और उनके आध्यात्मिक गुरुओं के बारे में बहुत प्रशंसा और सम्मान का इस्तेमाल करेंगे और वह कहेंगे कि उनके गुरु और हम एक समान और बराबर हैं, और तुम सब हमारे

25

हो। वारिस सरकार अपने शिष्यों को व्यवसाय की श्रेणी के अनुसार सलाह देते थे। जब कोई किसी के बारे में चुगली करता है, तो वे इस तरह से जवाब देते थे कि उस व्यक्ति में चुगली करने का दोष रह जाता था।
वह अपने ढंग के आचरण की मिसाल थे। हज़रत कुछ भी कर सकते थे और उस काम के लिए वह इस मामले में लगे रहते थे और अपने पूरे जीवन काल में कभी भी इसे नहीं छोड़ते थे। अगर वह किसी के घर में रहेंगे तो भविष्य में हमेशा उसके साथ रहेंगे।
हजरत वारिस पाक सन् 1321 हिजरी सन् 1903 में बीमार हुए और बीमारी का दौर दो साल तक जारी रहा। अपनी मृत्यु से एक दिन पहले, सूर्यास्त के बाद, हज़रत वारिस पाक ने पूछा कि अभी क्या समय हो रहा है, और जब उन्होंने उसे बताया तो उसने बताया कि हम रात के आखिरी पहर 4 बजे अपने महान मित्र से मिलने के लिए इस दुनिया से चले जायेंगे। फिर ऐसा ही हुआ। वर्ष 1232 हिजरी के सफर माह की पहली तारीख को, जोकि 6 अप्रैल वर्ष 1905 को, रात्रि के अंतिम प्रहर में 4.13 बजे हजरत वारिस पाक अपने महान मित्र से मिलने के लिए इस नश्वर संसार को छोड़कर चले गए। और उनकी मृत्यु के समय उनकी आयु 85 वर्ष थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शिष्यों की संख्या की गणना का नियमन वारिस पाक कठिन है और संभव नहीं है। उनके शिष्यों में हिंदू मुसलमान, यहूदी, ईसाई, सिख और पारसी (अग्नि पूजक) थे और उनमें से कुछ ने अपने नाम के बाद वारिसी जोड़ लिया था । लेकिन उनमें से कई की पहचान इस मामले में नहीं हो सकी।

26

हजरत वारिस शाह हमेशा इस्लामी शरिया कानून का सम्मान करते थे। अपनी सभी अवस्थाओं में वे खड़े होकर नमाज़ अदा करते थे। अपने जीवन के अंतिम समय में जब उनके शरीर में बहुत कमज़ोरी थी, लेकिन उस अवस्था में भी वे खड़े होकर नमाज़ अदा करते थे। जब वे सजदे से खड़े होते, तो उस समय उनके सेवक उनकी काँखों में हाथ डालकर उन्हें खड़ा करते। मस्जिद के संबंध में, हज़रत चाहे मौसम कितना भी कठोर क्यों न हो, पैदल ही मस्जिद जाते थे, लेकिन हज़रत वारिस शाह ने वाहन स्वीकार नहीं किया। हजरत ने इस मामले में शिष्य बनाने की शर्त के रूप में नमाज अदा करने की घोषणा की। हजरत ने स्पष्ट रूप से कहा कि जो व्यक्ति नमाज अदा नहीं करेगा, वह उनका शिष्य नहीं होगा। हजरत वारिस शाह पाँच नमाज़ें जल्दी पढ़ते थे और नमाज़ देर से नहीं पढ़ी जाती थी। और नमाज़ को तसल्ली से और बहुत ध्यान और सावधानी से अदा करते थे और हर साल मुहर्रम के महीने में उनके द्वारा बहुत ज़्यादा दान दिया जाता था। दरगाह की इमारत में मुफ़्त खाने-पीने और शरबत पीने की व्यवस्था होगी। खास तौर पर इस महीने में हज़रत वारिस शाह इस मामले में पवित्र कुरान को बहुत पढ़ते थे, और मुहर्रम के महीने में उन पर हमेशा एक तरह का दुख छाया रहता था । हज़रत कर्बला के शहीदों की किताब को सही परंपरा के अनुसार सुनते थे। हज़रत वारिस अक्सर ऐसी घटनाएँ सुनते थे जिसमें कर्बला के शहीदों की बहादुरी का वर्णन होता था। जब कोई शोक का दोहा होता था तो हजरत कहते थे कि यह सही नहीं है क्योंकि कर्बला के शहीदों ने अल्लाह की इच्छा को त्याग दिया है। हजरत इस्लामी ज्ञान के विद्वानों और विद्वानों का बहुत सम्मान करते

27

थे। और मुफ्ती (इस्लामी विधिवेत्ता), हाफिज (कुरान-कहनेवाला), कारी (पवित्र कुरान का वाचक) और अरब व्यक्तियों के लिए तो हजरत बहुत ध्यान और सम्मान देते थे और उन्हें यात्रा व्यय के लिए पैसे देते थे, अन्य चीजें प्रदान करते थे और उन्हें मिठाई और हज के कपड़े भी प्रदान करते थे। चमत्कार: हज़रत मुहम्मद साहब के कई चमत्कार हैं। वारिस अली शाह साहब और उन सभी का संक्षेप में उल्लेख करना संभव नहीं है । इसलिए इसके लिए पुस्तकों की एक बड़ी मात्रा की आवश्यकता है। वास्तव में हजरत स्वयं चमत्कारों और अलौकिक आदतों वाले व्यक्तित्व थे।
जब हज यात्रा के दौरान उन्होंने अजमेर का दौरा किया और अपने पैरों में जूते पहनना छोड़ दिया, जब वे अरब देश में दाखिल हुए और जब उन्होंने वहां हज यात्री की पोशाक देखी तो उन्होंने इस मामले में इसे अल्लाह के प्रेमी की पोशाक घोषित किया और कहा कि "हम इस पोशाक को उसके शरीर से कभी नहीं हटाते"। तो हज़रत वारिस अली शाह साहब ने अपने पूरे जीवनकाल में इसी पोशाक को पहना।
हज यात्राएं हज़रत ने सरल और सहज तरीके से कीं और उनके साथ न तो शिष्यों का काफिला था, न ही कोई नौकर-चाकर, सामान, सुविधा या मौसम की समस्या और यात्रा की परेशानियों की चिंता । जब उनमें हज के प्रति जुनून पैदा होता तो वे अपने साथ कम्बल लेकर पैदल ही मक्का और मदीना की ओर चल पड़ते। बहुत से लोगों ने उन्हें बहुत रुचि और शौक से हज यात्राएं करवाईं, लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने उनसे हाजी साहब के नाम से ही पूछा या बताया। लेकिन हज़रत को ऐसी ख्याति और शोहरत मिली कि अल्लाह के बंदे खुद

28

उन्हें हाजी साहब कहने लगे। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के कई देशों में जब फकीर व्यक्ति की चर्चा होगी तो उन्हें इस मामले में हाजी वारिस अली शाह साहब ही कहा जाएगा। यह हज यात्रियों के पहनावे के काबा के मालिक अहराम की तरह है और हाजी साहब की सम्मानजनक उपाधि उन्हें दी गई और इस मामले में विशेष रूप से उनके पवित्र व्यक्तित्व के लिए ही आरक्षित की गई।

हज़रत मुहम्मद साहब की दरगाह की इमारत वारिस अली शाह दरगाह उत्तर भारत में उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में लखनऊ से 36 किलोमीटर दूर स्थित है और यह दरगाह उसी स्थान पर है जहां हजरत वारिस अली शाह इस नश्वर दुनिया से चले गए। दरगाह की इमारत इंडो ईरानी शैली के मिश्रित निर्माण का नमूना है वास्तुकला का भव्य नमूना। मकबरे के निर्माण में न केवल मुसलमानों ने बल्कि हिंदुओं ने भी भव्य और उत्कृष्ट तरीके से भाग लिया है। पहली पंक्ति में मकबरे के सजावटी पंख एक हिंदू राजा द्वारा बनाए गए थे। मकबरे के दरवाजे पर चांदी का आवरण कश्मीर राज्य के राजा द्वारा व्यवस्थित किया गया था । संगमरमर का फर्श हिंदू ठाकुर द्वारा रखा गया था । देवा शरीफ में आगंतुकों के ठहरने के लिए दरगाह की इमारत के चारों कोनों पर 80 कमरे बनाए गए थे जो शिष्यों और भक्तों द्वारा बनाए गए थे और कमरों पर नाम प्लेटों पर उन लोगों के नाम लिखे गए थे जिन्होंने दरगाह की इमारत में कमरे बनाए थे।
देवा शरीफ का मेला भारतीय उपमहाद्वीप में बहुत प्रसिद्ध है और पूरे उत्तर भारत में इससे बड़ा कोई और मेला नहीं लगता। यह कार्तिक माह में शीत

29

ऋतु में, चंद्र मास की तिथि 17, 19 के अनुसार आयोजित किया जाएगा, जिसकी शुरुआत कुरान की आयत कुल की तिलावत और अन्य औपचारिकताओं के साथ होगी। इस मेले की शुरुआत हजरत मुहम्मद साहब ने की थी। वारिस अली शाह ने अपने पिता हजरत हाजी कुर्बान अली शाह के उर्स (पुण्यतिथि) के अवसर पर इस मेले का आयोजन किया था और इस मेले में भारत के दूर-दूर से तथा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सऊदी अरब, यूरोपीय देशों और एशियाई देशों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु इस मेले में भाग लेने आते थे। उस समय यहां उच्च कोटि की प्रदर्शनी होती थी। इस मेले के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे।
१, हिंदी और उर्दू कवियों की कवि गोष्ठियाँ, 2.संगीत सम्मेलन
3. भाषण प्रतियोगिता
4. वहां फुटबॉल, बैडमिंटन, रैफल शूटिंग, फ्लाइंग गेम्स और आतिशबाजी का आयोजन किया जाता है, जिसमें कलाकार अपनी कला को बेहतरीन और आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करते हैं।
मंदिर भवन में एक ट्रस्ट समिति है, तथा मैनपुरी गांव के एक धनी व्यक्ति स्वर्गीय ठाकुर पंजुम सिंह का निःशुल्क सार्वजनिक रसोईघर अभी भी कार्यरत है, जो पूरे वर्ष आगंतुकों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराता है।
यह त्यौहार बहुत ही अनोखा है जिसमें अलग-अलग धर्मों के लोग जोश, प्यार और एकमतता के लिए भाग लेते हैं। कुछ आंतरिक आकर्षण होगा जो सभी को एकजुटता के त्यौहार में भाग लेने के लिए मजबूर करेगा।

30

हजरत की दरगाह की इमारत वारिस अली शाह आध्यात्मिकता और वास्तविकता का एक स्रोत है। और सभी लोगों के लिए संपर्क का एक पुल है। और इसकी खूबसूरत और आकर्षक इमारत इस मामले में भक्ति और प्रेम का एक जीवंत उदाहरण है।
हज़रत के आदेशानुसार हजरत वारिस अली शाह, दरगाह की इमारत में कोई रखवाला या खलीफा नहीं है। इसलिए यह दरगाह इमारत सभी के लिए नेकी का केंद्र है। साथ ही यह नेकी और सदका का दरिया है, जो हर पल बहता रहता है और इस मामले में कोई भी नेकी से अछूता नहीं रह गया।
हजरत वारिस पाक अपने शिष्यों से निम्नलिखित बातें कहा करते थे।
1.अगर प्यार है, तो हम आपके साथ हैं, भले ही आप 1000 कोस की दूरी पर रहते हों (कोस का अर्थ लगभग 8 किलोमीटर (1.1 मील) भी हो सकता है। अर्थशास्त्र में कोस या क्रोश की मानक इकाई एसआई इकाइयों में 3075 मीटर और शाही इकाइयों में 1.91 मील के बराबर है।)
2.यहाँ लोक और परलोक है। अतः कोई भी व्यक्ति लोक और परलोक दोनों ले सकता है और यदि आवश्यकता हो तो इस विषय में दोनों ले सकता है।
3.जो हृदय संसार के स्रोतों से दूर रहेगा, वह अल्लाह की याद में लगा रहेगा, ताकि वह द्वेष और मतभेदों के प्रभाव से प्रभावित न हो।
4.ऐसा फ़कीर अपने पीछे सावधान रहता है, उसके सामने दुनिया है और उसके सामने अल्लाह का ख़ौफ़ है।

31

5.जो फकीर व्यक्ति संसार से सम्बन्ध रखता है, वह इस मामले में कष्ट पाएगा और जो अल्लाह पर ईमान रखता है, वह इस मामले में सफल होगा।
6.शरिया इस्लामी कानून का पालन करने के साथ-साथ पैगंबर की सुन्नत पर कार्य करने पर प्रतिबंध है ।
7.वह हृदय प्रशंसा के लिए अच्छा है जिसमें द्वेष और द्वेष न हो।
8.अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पण एक ऐसी स्थिति है जिसमें अच्छाई के बदले बुराई होगी और अच्छाई पहले से ही मौजूद होगी।
9.जो व्यक्ति सूरह फलक को अधिक पढ़े, उसकी जीविका में वृद्धि होगी।
सोते समय सूरह आयत कुर्सी पढ़ने से शरीर के दर्द में राहत मिलेगी।
दारुद (दुआ) पढ़ना अच्छा है।
मध्य रात्रि में दारुद पढ़ना बहुत अच्छा है ।

जीवन की सबसे अच्छी पहचान अल्लाह की पहचान है । जब किसी साहित्य से यह पहचान होगी तो वह इस मामले में महान साहित्य होगा और मनुष्य इस श्रृंखला की कड़ी है और नबी की हदीस में उल्लेख है कि "कोई खुद को पहचानेगा, फिर वह अल्लाह को पहचानेगा।" वह साहित्य जो हमारी पहचान लेगा और जो इस मामले में ऐसे महान साहित्य का हिस्सा है। और जो अल्लाह की पहचान का मार्ग है।
सूफीवाद की उच्चतर महान कविता और अल्लाह का ज्ञान, जो इसकी उत्कृष्टता की डिग्री पर निर्भर करता है।

32

पूर्वी जगत के ज्ञान के अंग्रेज विद्वान डॉ. निकलसन ने सूफी मत पर टिप्पणी करते हुए इस पर ईसाई धर्म के प्रभाव की खोज की। उन्होंने इस मामले में भारतीय और यूनानी प्रभावों के चिंतन का भी उल्लेख किया। अतः यह बात सही है कि अल्लाह के ज्ञान का द्वार मनुष्य के लिए कभी बंद नहीं हुआ। यह धर्म इस्लाम है, जो हज़रत आदम के समय से शुरू हुआ और जिसे अंतिम नबी मोहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) ने पूरा किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी एक आदर्श व्यवस्था है, जिसमें सबसे बड़े दायित्वों में से अम्र- बिल - मा'रूफ (स्वीकृत गुणों का आदेश देना) और नहीं अनल मुनकर (पाप से रोकना) हैं, जो कुरान की शक्ल में पाए जाते हैं और अल्लाह की देन हैं कि इस मामले में हम पर कृपा है। वे कवि या लेखक जिन्होंने इस मामले में सीधे कुरान और पैगम्बर के जीवन से प्रेरणा लेकर किताबें लिखी हैं, और इस तरह वे इस मामले में मानव और अल्लाह तक पहुँच सकते हैं। और इस संबंध में हम इस मामले में मानव और अल्लाह को पहचान सकते हैं, और ऐसे साहित्य में इस मामले में महानता की बहुत अधिक संभावना पाई जाएगी।
साहित्य और कविता की असल सच्चाई सुंदरता है। अल्लाह की सुंदरता को अपने सामने रखो और इस मामले में सोचो कि दुनिया की हर चीज़ में सुंदरता है, जो इसका आधार मूल्य है। यह आधार मूल्य जीवनी है। और इस दृष्टि से वह साहित्य सच्चा और महान है जिसमें सच्चाई और हक़ है। साथ ही गहरे ईमान की नियन्त्रण और निस्वार्थता पाई जाती है। क्योंकि असल में सुंदरता शब्दों में नहीं बल्कि उसके अर्थ में पाई जाती है। और जीवन की निस्वार्थता ही जीवन का आधार

33

मूल्य है, और गहरे मूल्यों को जानना अल्लाह को जानने का प्रमुख आधार है। अल्लाह पर ईमान के बिना स्वार्थी निर्णय लेना इस मामले में निर्णायक लड़ाई नहीं है। लोगों को दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह हमें इस मामले में सच्चे शब्द लिखने की राह दिखाए और ताकि ऐसे शब्द जो लेखन में बोल सकें, सच्चाई के साहित्य की परिघटना हों।
कमर वारसी हमारे ऐसे ही लेखक हैं, उन पर अल्लाह की रहमत है। और उनके लेखन में शब्द खुद बोलते हैं और इस तरह उनका लेखन सत्य की व्याख्या करता है। और इस मामले में कोई दो राय नहीं है।
क़मर वारसी गहरी सोच के साथ लिखते हैं। चाहे वह नात हो, ग़ज़ल हो, मनक़िबत हो, सलाम हो (पैगंबर (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) पर सलाम भेजना "अल-सलामु अलैयका " कहकर किया जा सकता है अय्युहा'ल-नबियु वा रहमत अल्लाही वा बरकातुबे (आप पर और पैगंबर पर शांति हो)।
वह हर विषय में सफल और संपन्न है। उनकी पहली किताब नात (नात एक अरबी शब्द है और इसका शाब्दिक अर्थ है, प्रशंसा) का संग्रह है। उर्दू में नात का मतलब पैगंबर हजरत मुहम्मद (PBUH) की प्रशंसा है । पैगंबर मुहम्मद (PBUH) की प्रशंसा के साथ एक कविता (जिसे उर्दू में नात भी कहा जाता है), जिसे "शम्स दुहा " नाम से प्रकाशित किया गया था, और इस पुस्तक से यह इस मामले में पैगंबर के प्रति उनके गहरे प्रेम को जाना जाता है। और साहित्य में, इस पुस्तक को समानता और उच्च मानक के मूल्य के साथ देखा गया था। दूसरी किताब एक ग़ज़ल संग्रह थी। ग़ज़ल एक प्रकार की प्रेम कविता या ओड है, जिसकी उत्पत्ति अरबी कविता में हुई है। ग़ज़ल अक्सर

34

आध्यात्मिक और रोमांटिक प्रेम के विषयों से निपटती है और इसे प्रेमी से नुकसान या अलगाव के दर्द और उस दर्द के बावजूद प्रेम की सुंदरता दोनों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में समझा जा सकता है।, जिसे "यम तहरीक " नाम दिया गया था, और क़मर का लेखन का मूल क्षेत्र उर्दू ग़ज़ल है, और संग्रह की तीसरी किताब को नात दी गई है और इस किताब का नाम "अता ज़हूर " है, और इस किताब में संग्रह हज़रत के बारे में है जहूर, अहमद शाह साहब, और इस संग्रह से यह कमर वारसी की शैली में उनकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा के रूप में जाना जाता है।
आइना ' शीर्षक से प्रकाशित हुई है जहूर ' गद्य में है, और यह पुस्तक हज़रत मुहम्मद अली से भी संबंधित है। जहूर अहमद शाह साहब। उनकी जीवनी, रहस्योद्घाटन और चमत्कारों के लेखन के अध्याय में, यह इस मामले में एक दस्तावेज है, और इस पुस्तक से उन्हें उनके सुंदर गद्य लेखन के लिए जाना जाता है। और अब उनकी पाँचवीं पुस्तक ' हुज़ूर -ए- वारिस ' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में हज़रत के बारे में अतिरिक्त विवरण हैं। वारिस शाह.
कमर वारिसी और उनका परिवार हज़रत महमूद शाह वारसी के शिष्य हैं। और इसी नाते से कमर वारिसी इस मामले में यह सोचते हैं कि मनक़िबत (यह फ़ारसी से उर्दू में आया अरबी मूल का शब्द है) प्रकाशित की जाए । मनक़बत एक ऐसा शब्द है जो मूल शब्द मनाक़िब से निकला है मनाक़िब مناقب इसका मतलब है गुण और क्षमताएँ। हज़रत मुहम्मद की मनक़बत (इसका मतलब है प्रशंसा, गुण, महिमा, पैगंबर मोहम्मद और उनके

35

साथियों की प्रशंसा में लिखी गई कविता।) वारिस शाह का अपने ऊपर कर्ज बताया।
अब कर्ज चुका दिया गया है। और यह काम उन्होंने बेहतर तरीके और शैली में किया है। और इन लेखों से हज़रत के बारे में पता चलता है वारिस शाह के संदेश, पूर्णता, तथा प्रवाह और गति की शैली में अच्छी और सर्वश्रेष्ठ क्षमताएँ। विषय के अनुसार, उच्च स्तरीय मानक है। लेकिन रदीफ़ (रदीफ़ वह है जो क़ाफ़िया के बाद आता है और हमेशा दोहराया जाता है। एक नियम के रूप में, क़ाफ़िया के बाद आने वाली किसी भी चीज़ को अन्य तुकांत पंक्तियों या मिसरा'स में दोहराया जाना चाहिए) और क़ाफ़िया (क़ाफ़िया वह शब्द है जो किसी अन्य पंक्ति या मिसरा'आ में किसी अन्य शब्द (क़ाफ़िया भी) के साथ तुकांत होता है) और बहर (अरबी समुद्र से; फ़ारसी: अज़रबैजानी: तुर्की: बहिर; उर्दू) के उपयोग के अनुसार उज़्बेक: बहर) का अर्थ अरबी, फ़ारसी, तुर्की और उर्दू कविता में एक मीटर है) अध्याय इस मामले में बहुत सुंदर और अच्छे हैं।
हर भक्त के दिल में हजरत मुहम्मद साहब की तारीफ करने की चाहत होती है। वारिस शाह, लेकिन जिन शायरों ने हज़रत के प्रेम के संदेश को अपना हिस्सा बनाया है वारिस, इसलिए इस मामले में ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल है। जैसे शायर हसन ने पैगम्बर की तारीफ़ बेमिसाल की है और उसी तरह हज़रत की तौहीन भी बेमिसाल है। निजमुद्दीन हज़रत अमीर ख़ुशरो की औलिया भी इस मामले में बेमिसाल है और जिस तरह हज़रत की कमीज़ के किनारे से लगाव वारिस कवि बादाम है वारिसी... और उनकी जगह इस मामले में कोई दूसरा शव नहीं मिला है।

36

यह तथ्य है कि बादाम की कविता वारिसी हजरत मुहम्मद साहब के प्रति श्रद्धा रखने वाले अन्य कवियों को मार्गदर्शन दे रहे हैं। वारिसी. मनक़िबत (प्रशंसा) कविता के बीच की कड़ी, जिसे बेदम ने शुरू किया था वारिसी इतनी बढ़ गई कि इस बात की गिनती करना मुश्किल है। यहां अगर हम यह कहें कि तमाम पवित्र लोगों की अकीदत में शायरों ने जितनी मनक़िबतें लिखीं, वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ में लिखी गई मक़िबतों से कम है। इस मामले में वाइस शाह का नाम भी शामिल है और जो गलत नहीं होगा। बहुत से संग्रह, गुलदस्ता और कुलियत, जो पहले ही प्रकाशित हो चुके थे, और हम उनकी कुल प्रकाशित पुस्तकों की संख्या नहीं ला पाए। और उनमें से खोजना मुश्किल है और संभव नहीं है। वे पुस्तकें बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। और वे कविताएँ जो दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, साथ ही वे प्रशंसात्मक कविताएँ जो प्रकाशित नहीं हुईं, और उनकी संख्या निश्चित रूप से इस मामले में हजारों में होगी।
मिर्ज़ा ग़ालिब, शेख इमाम बख्श नासिक, सर सैयद अहमद खान, अल्लामा इकबाल, हसरत मोहानी, अकबर वारसी, अफकार मोहनी, खाजा हसन निज़ामी, अमीर मिनाई, शाहिक अब्दुल क़ादिर, मौलाना मोहम्मद अली जौहर, मौलवी फजल हक, रियाद ख़ैहैराबादी आदि ने इस मामले में मनक़िबत (प्रशंसा) कविता को पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने में महारथ हासिल की है । इस तरह न जाने कितने अन्य शायरों ने बड़ी संख्या में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में मनक़िबत (प्रशंसा) के काव्य प्रस्तुत किए

37

हैं। वारिस शाह। और अभी भी इस मामले में प्रस्तुति का काम आगे बढ़ रहा है। भक्ति का यह उपहार अपने मूल रूप में इस मामले में अल्लाह की मान्यता का उल्लेख करता है।
हज़रत के साथ प्रेम और भक्ति का अर्थ वारिस शाह अल्लाह के ज्ञान की ओर यात्रा है। और इस मामले में इस्लामी शायरात कानून की ओर जा रहा है। तो हज़रत के बीच संबंध वारिस शाह सत्य और वास्तविकता, प्रेम और स्नेह, साहस और बहादुरी, भरोसा और आस्था, धैर्य और सहनशीलता, अनुशासन और निस्वार्थता में विश्वास है।
इस तरह कहा जा सकता है कि शायर क़मर वारिसी सच्चे साहित्य के रचयिता हैं। अल्लाह उन्हें इस मामले में जो रास्ता चुना है उस पर चलने की दैवीय हिदायत अता करे।
हजरत मुहम्मद साहब के दरबार में उनकी भक्ति कविता का उपहार स्वीकार किया जा सकता है। वाइस शाह. अख्तर लखनवी
रेडियो पाकिस्तान

38

3. कनेक्शन का दर्पण

हज़रत हाजी मिया महमूद शाह वारसी, जो वारसिया के सूफी सिलसिले के फ़कीरों में से एक ऐसे फ़कीर हैं जो हज यात्रियों की पोशाक पहनते हैं। और उनका मार्गदर्शन भारत में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के लिए सुधार के एक प्रकाश दीपक की तरह है। वारसिया के सूफी सिलसिले के विकास में, इस मामले में उनका बहुत महत्व पाया जाता है, साथ ही उनके व्यक्तित्व और योग्यता, चरित्र और जीवनी ने हज़रत हाजी वारसी अली शाह के मिशन कार्य को आगे बढ़ाया। और इस मामले में उन्होंने इस मामले में एक महान और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
उन्होंने अपने मार्गदर्शक अब्दुल हसन मिया वारसी की सेवा में रहकर, जिन्होंने उत्तर प्रदेश के कई शहरों का दौरा किया और बड़ी संख्या में लोगों को सही रास्ता दिखाया। और बड़ी संख्या में लोगों (हिंदू, सिख, ईसाई, आदि) ने बड़ी संख्या में गैर-मुस्लिम परिवार के सदस्यों को इस्लाम धर्म में शामिल किया। और हज़रत अब्दुल हसन मिया वारसी की विशेष नज़र के कारण, जिन्होंने आध्यात्मिक उत्कृष्टता का स्थान प्राप्त किया और वारसिया के इतिहास के कागजात के लिए, इस मामले में गर्व किया जा सकता है।
और इस मामले में मैं इस बात से हसद की हालत में हूं कि सिर्फ मेरा खानदान ही नहीं जो हाजी महमूद शाह मिया वारिसी के जरिया से वारिसिया में दाखिल हुआ बल्कि मेरे खानदान के कई और लोग भी हैं

39

जिन्हें लगातार लंबे समय तक मिया साहब की खिदमत करने का मौका मिला और जिन्हें इस मामले में यह खुशी हासिल हुई।
मेरे दादाजी शेख अहमद हुसैन वारसी ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन्हें हाजी मिया महमूद शाह वारसी की निकटता और सेवा का मौका लंबे समय तक मिला है। विभिन्न शहरों की यात्रा करते समय, मिया साहब मेरे दादाजी को अपने साथ रखते थे और उनकी यात्रा अवधि बढ़ाते थे। इस अवधि के दौरान, न केवल उन्हें जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का मौका मिला, बल्कि कुछ ऐसी घटनाएं भी हुईं जिन्हें उन्होंने इस मामले में अपनी आश्चर्य भरी निगाहों से देखा और जो जीवन का एक विशेष हिस्सा बन गईं और जो दिलो- दिमाग में दर्ज हो गईं और इस मामले में एक ऐसी जगह पर सुरक्षित स्थान पर रख दी गईं जिसे भुलाया नहीं जा सकता।
एक बार महमूद मिया वारसी तीन दिन के लिए एक शहर में ठहरे हुए थे और मेरे दादा हमेशा की तरह उनके साथ रात को सो रहे थे। आधी रात को मेरे दादा की आँख खुली तो उन्होंने देखा कि मिया साहब अपने कमरे में नहीं हैं। तो उन्हें चिंता हुई कि इतनी रात में वे कहाँ चले गए। कुछ देर इंतज़ार करने के बाद वे बाहर गए तो मिया साहब को वहाँ नहीं पाया। इस मामले में मेरे दादा को कुछ पता नहीं चला और फिर उन्होंने देखा कि एक शेर गुस्से में मिया साहब के कमरे की तरफ़ आ रहा है। शेर के डर से उनकी हालत और खराब हो गई और वे बेहोश होकर गिर पड़े। दूसरे ही पल वे अपनी सामान्य स्थिति में आ गए और उन्होंने देखा कि मिया साहब उनके पास हैं तो उन्होंने सामने की तरफ़ इशारा करके बताया कि शेर

40

है। मिया साहब ने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि वहाँ तो कोई शेर नहीं है, शहर में कौन सा जानवर है? और जब वह उनके पास है तो इस मामले में उन्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।
इसी तरह अगले दिन रात को सोते समय जब उसकी आँख खुली तो उसे चिंता हुई और उसने मिया साहब को अपने शयन कक्ष में न पाया। और डर के मारे उसने कमरे का दरवाजा खोला तो उसने देखा कि एक भालू उन्मत्त अवस्था में आ रहा है और वह मिया साहब के शयन कक्ष की ओर जा रहा है। और यह देखकर वह फिर बेहोशी की हालत में आ गया। कुछ देर बाद उसकी हालत सामान्य हो गई और उसने देखा कि मिया साहब उसके पास बैठे हैं। भालू के बारे में उसके कहने से पहले मिया साहब ने उससे कहा कि " नन्हे मिया अगली बार जब तुम मुझे अपने बिस्तर पर न देखो तो इस बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है या इस बारे में मुझे खोजने के लिए बाहर मत जाना या इस संबंध में डरना। और इस तरह हमारे काम में एक प्रचलित विघ्न पैदा हो जाएगा।" उस दिन से इस मामले में ऐसी अजीबोगरीब घटनाएँ देखने के बाद मेरे दादाजी को इस संबंध में कोई चिंता या डर नहीं हुआ। और वे ये सारी घटनाएं कभी- कभी हमारे घर में मेरे पिताजी को बताया करते थे, और इसलिए इन घटनाओं का मेरे बचपन से ही इस मामले में मेरे मन की स्मृति पर बहुत प्रभाव है।
मेरी चाची हज्जन के बारे में मुरादन जो हमारे खानदान की एक महिला थी और जिसने वारिसिया सूफी सिलसिले से अपने रिश्ते इस तरह कायम कर लिए थे कि उसने अपनी पूरी जिंदगी में इस मामले में कोई शादी नहीं की। हाजी महमूद मिया की कृपादृष्टि के कारण धीरे-धीरे इस मामले में दुनिया के विभिन्न प्रकार

41

के रंगों का असर खत्म हो गया। थोड़े ही समय में उसे इस मामले में हज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अतावा से देवा शरीफ तक वह हज के नाम से मशहूर और प्रसिद्ध हो गई । मुरादन.
अतावा शरीफ हजरत हाजी महमूद मिया का स्थायी निवास स्थान है और देवा शरीफ में हजरत हाजी वारिस अली शाह की मजार स्थित है। और मेरी मौसी की पूरी जिंदगी इन्हीं दो जगहों से जुड़ी रही। और इन्हीं दो जगहों के लिए उनकी हालत जो अजीब थी, अतावा शरीफ में रहने से वह बेचैन रहती थीं और देवा शरीफ जाना चाहती थीं। और देवा शरीफ में रहने के दौरान हाजी महमूद मिया को छोड़ने के कारण वह बेचैन रहती थीं।

वारिस शाह की मजार के इर्द-गिर्द खूबसूरत दरगाहों की एक श्रृंखला है। हर दरगाह वारिसिया के सूफी सिलसिले के किसी न किसी व्यक्ति की है । हाजी महमूद मिया वारिसी की दरगाह जो सरकार वारिस शाह पाक की मजार के दाहिनी तरफ है। और उनकी मृत्यु के बाद यह इमारत मेरी मौसी हज्जन को दे दी गई थी। मुरादन । और उस समय वह देवा शरीफ में आ गई और वहीं स्थायी रूप से बस गई। लेकिन उसकी दिली इच्छा थी कि हाजी महमूद मिया के दुनिया से चले जाने के बाद वह इस मामले में उनसे जुड़ी रहे। इसलिए उनके जीवनकाल में हाजी महमूद मिया की मजार के परिसर में, यानी अटवा शरीफ में उनके अंतिम विश्राम स्थल के लिए जमीन आरक्षित कर दी गई थी और देवा शरीफ में अपने स्थायी निवास के दौरान उन्होंने जमीन का किराया एडवांस में दे दिया था। ताकि उनकी मृत्यु के बाद, उनकी अंतिम सलाह के अनुसार, उनके शव को लाल रंग की कार में देवा शरीफ से अटवा शरीफ ले जाया जाए।

42

इसलिए जब पांच साल पहले उनकी मृत्यु हुई, तो उनके शव को लाल रंग की कार में अटवा शरीफ ले जाया गया।

मेरे मामा अशफाक हुसैन वारिसी जो अपने सूफी सिलसिले के प्रति बहुत ही लगाव और दिलचस्पी रखते थे, जो जुनून की तरह था, चाहे वह व्यक्ति किसी भी धर्म का हो। और अगर वह वारिसिया के सिलसिले से जुड़ जाता है, तो वह ऐसा बन जाता था जैसे कि वह परिवार का एक सदस्य हो। वारिसिया सिलसिले के फकीर व्यक्तियों की सेवा करना उनका विशेष उद्देश्य था। अगर उन्हें सड़क के किनारे कोई हज यात्री की पोशाक पहने हुए व्यक्ति भी मिल जाता, तो वह उसे इस मामले में बहुत सम्मान और आदर के साथ अपने घर ले जाते। और जो कुछ भी घर में मिलता वह उनके सामने पेश किया जाता। और वह पवित्र व्यक्ति जितने समय उनके घर में रहेगा, वह लगातार उनके पास रहेगा और इस तरह खुश होगा कि उसे इस मामले में एक खजाना मिल गया है, और जुनून की आदत के कारण, वह अपनी आजीविका के मामले की परवाह नहीं करता था।

इस कारण चार सदस्यों वाले छोटे से परिवार पिता, माता, पुत्र और पुत्री को इस मामले में हमेशा भूख का सामना करना पड़ेगा। हजरत हाजी महमूद शाह वारसी जब फराकाबाद से आए थे तो वह अपनी पूरी यात्रा के दौरान मेरे चाचा के घर में ठहरते थे और मेरे चाचा के लिए वह समय ईद के त्यौहार के लिए उनके आवागमन का था। वह ठहरने के समय और मियां साहब के समीप रहने के समय को अपने जीवन के मूल्यवान समयों के रूप में समझेंगे। इस बातचीत और वार्तालाप में उनकी अशिक्षा के बावजूद, शालीनता और विनम्रता पाई जाती थी और औपचारिकताओं में, उनकी शैली इस मामले

43

में उनसे बहुत ईर्ष्या करती थी। वह सरकार वारिस के भक्तों की सेवा को इबादत समझते थे और उन्हें अपने जीवन से भी ज्यादा पसंद करते थे। उनकी सादगी के कारण कुछ लोग जो बुरे स्वभाव के थे और अवैध रूप से लाभ उठा रहे थे। उन्होंने इस मामले में कोई परवाह नहीं की और न ही कभी शिकायत की। वास्तविकता यह है कि अगर उन्हें वारिसी श्रृंखला का कोई व्यक्ति नहीं मिलता है, तो वह इस कारण से दुखी हो जाते हैं। वारिसियों की श्रृंखला के एक फकीर व्यक्ति रफीक शाह वारिसी ने अपनी सेवा और भक्ति के साथ-साथ अपने प्रेम के जुनून के कारण अपने बेटे के साथ अपनी अविवाहित बेटी का भी विवाह कर दिया है।

मेरे पिता, स्वर्गीय मुस्ताक हुसैन शाह वारिसी, साहित्यिक पद पर आसीन व्यक्ति थे। उन्होंने फरकाबाद, उत्तर प्रदेश भारत में भारती पाठशाला स्कूल से 10 वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने मुंशी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। भारत के सुप्रसिद्ध भोपाल शहर से फाज़िल कोर्स किया है और उर्दू, हिंदी और फ़ारसी भाषाओं में उन्हें पूर्ण निपुणता और ज्ञान है। अपने पूरे जीवन में वे शिक्षण और निर्देश विभाग से जुड़े रहे। उन्होंने भारत से पाकिस्तान तक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे परिवार की तरह, शिक्षा के क्षेत्र में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिला जो इस मामले में एक आदर्श बन सके और महत्वपूर्ण कार्य कर सके। इसलिए इस कारण से, उन्होंने अपना पूरा ध्यान दिया है ताकि उनके परिवार के सदस्य ज्ञान और कौशल प्राप्त कर सकें ताकि वे जीवन और जीवन के उद्देश्य को जान सकें।

44

मुझे याद है कि मेरे पिता ने मेरे बड़े भाई की शिक्षा के लिए बहुत से कदम उठाए हैं और इस मामले में अहम भूमिका निभाई है। लेकिन मेरे बड़े भाई ने उन्हें ज्ञान की इस रोशनी से दूर रखा। उस दौरान हाजी महमूद वारसी हमारे घर आए। मेरे पिता ने मुझे और बड़े भाई को अपने पैर चूमने के लिए बुलाया। और मैं उस समय बहुत छोटा था। मेरे पिता ने मुलाकात के मौके का फायदा उठाते हुए मिया साहब को मेरे बड़े भाई के बारे में बताया और कहा कि उन्हें पढ़ाई में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है। मिया साहब कुछ देर चुप रहे और फिर उन्होंने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा कि यह लड़का इस मामले में आपके मिशन को आगे बढ़ाएगा। और इस हकीकत को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि इस मामले में पवित्र लोगों की नज़र बहुत गहरी होगी। और आज, हमारे चार भाइयों में से मैं शिक्षा के कुछ चरणों को पास करने में सक्षम था। मैंने फरान हाई स्कूल सखार से मैट्रिक की परीक्षा और कराची विश्वविद्यालय से बीए की डिग्री की परीक्षा पास की है। प्रोफेसर डॉ नईम की देखरेख में लंबे समय के अंतराल के बाद तकवी ने फेडरल कॉलेज कराची से एमए उर्दू की परीक्षा पास की है और यह सब अल्लाह की रहमत, नबी की मोहब्बत और मिया महमूद शाह वारसी की नजर की खास मेहरबानी से हुआ है। साथ ही इस मामले में मेरे पिता का ध्यान और मेरी मां की दुआओं का भी असर रहा। मेरे घर में हमेशा मिया महमूद शाह वारसी की नजर रहती थी। और मेरे पिता भी इस बात का ध्यान रखते थे कि मिया महमूद शाह वारसी के मामलों में कोई लापरवाही न हो। आज हम सब भाई-बहन थे जिन्हें मिया महमूद शाह वारसी के बताए नामों से पुकारा जाता था। फकीर

45

शख्स की नजर की दूरी इसकी हकीकत से इस घटना से जानी जा सकती है कि जब हम सखार में रहते थे और मेरे भाई का जन्म हुआ तो अपनी परंपरा के अनुसार मेरे पिता ने हाजी महमूद वारसी को एक पत्र भेजकर इस मामले की जानकारी दी और साथ ही अनुरोध किया कि नवजात लड़के का नाम रखें।

कुछ दिनों बाद मेरे पिता जी को जवाबी पत्र मिला, जिसमें उन्होंने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं और वे खुश और प्रसन्न थे, लेकिन अपने व्यवहार के अनुसार मियाँ साहब ने इस मामले में बच्चे का नाम नहीं रखा। खास तौर पर नवजात शिशु के लिए एक वाक्य था जो सार्थक था कि बच्चे ने रंगीन पोशाक की बजाय सफेद पोशाक पहनी होगी। और कुछ लड़कों के लिए सफेद पोशाक बहुत अच्छी लगती है। और कुछ दिनों बाद मेरे नवजात भाई की मृत्यु हो गई।

वर्ष 1979 में मैं भारत आया था। और मेरे लिए देवा शरीफ़ के साथ-साथ अतावा शरीफ़ में हाजी महमूद वारसी की मज़ार को देखने का बहुत शौक़ और दिलचस्पी थी।

कटरा के स्थान पर मंदिर भवन का दौरा किया अटावा में शुहाब खान, वहां दिन के 10 बजे थे और उस दिन मौसम बहुत कठोर था। और 10 बजे भी, इस मामले में बहुत गर्म शाम का एहसास हो रहा था।

जब मैंने दरगाह में पैर रखा तो देखा कि एक व्यक्ति हज यात्री की पोशाक पहने हुए था और वह वहां लेखन कार्य में व्यस्त था। उसे वहां देखकर मैंने इस मामले में चैन की सांस ली और उसके पास जाकर उसे सलाम किया लेकिन जवाब में मुझे कठोर लहजे में

46

जवाब मिला। मैं हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा लेकिन उसने इस मामले में अपने हाथ पीछे खींच लिए। वह मुझे अजीब नजरों से देखने लगा। बहरहाल मैंने उसे बताया कि मैं पाकिस्तान से यहां आया हूं। तो उसने तुरंत मुझसे कहा, "वह इस मामले में क्या कर सकता है?" मैंने उसे बताया कि मुझे मियां साहब की मजार पर जाने का बहुत शौक है। और मैंने उससे कुछ नहीं कहा, तो उसने मुझसे कहा, "अगर तुम दर्शन करने आए हो तो वहां जाकर दर्शन करो और यहां क्या कर रहे हो?" नहीं तो दरगाह की इमारतें 11 बजे बंद हो जाएंगी। इस मामले में उस बुजुर्ग व्यक्ति के बात करने के तरीके और व्यवहार पर मुझे आश्चर्य और दुख हुआ। तो मैं वहीं खड़ा रहा और हाजी महमूद शाह के सिद्ध सूफी गुरु अबुल हसन मिया वारसी की दरगाह पर गया । और हाजी महमूद शाह की दरगाह पर गया। और जब मैं फतह की आयत पढ़ रहा था, तो मेरे साथ वहां जो दुर्व्यवहार हुआ, उसके कारण मेरी आंखों में आंसू आ गए। हाजी महमूद की कब्र पर बैठने पर मुझे वहां बहुत शांति मिली। बाहर की गर्मी की तुलना में दरगाह क्षेत्र में ठंडक और शांतिपूर्ण माहौल था। और इस कारण से, कुछ समय के लिए मेरी आंखें बंद हो गईं। कुछ समय बाद, जब मैं दरगाह की इमारत के बाहर था, तो मैंने देखा कि दरवाजे की तरफ एक व्यक्ति ने तीर्थयात्री की पोशाक पहनी हुई थी। और जिसने मुझे हाथ मिलाने की अनुमति नहीं दी? और इस बार उस व्यक्ति के चेहरे पर कोई कठोरता नहीं थी। और उसके बात करने के तरीके में इस बार कोई रूखापन नहीं था। और मुस्कुराते हुए उसने मुझसे पूछा कि "क्या मैं दरगाह की इमारत में गया था?" मैंने कहा "हाँ", अल्लाह का शुक्र है, मैं गया हूँ। फिर उसने पूछा,

47

"क्या आप पाकिस्तान से आए हैं?" मैंने कहा, "हाँ।" फिर उसने मुझसे कहा कि "भारत में यात्रा करना बहुत है, और तुम्हारे लिए कोई प्रतिबंध नहीं है। लेकिन तुमने रात में यात्रा नहीं की। लेकिन जब रात हो जाएगी, तो यात्रा बंद कर देना और उसी जगह रात गुजारना।" जब मैं उसके पास से जा रहा था, तो मेरा आश्चर्य बहुत बढ़ गया क्योंकि वह व्यक्ति जो मुझसे हाथ मिलाने को तैयार नहीं था, अब आगे बढ़कर मुझे गले लगाने लगा।

यह हकीकत है कि अल्लाह ने सच्चे दिल से अपने दोस्तों की दरगाहों पर हाजिरी लगाने वालों को निराश और वंचित नहीं किया। इसलिए मेरे लिए हाजी महमूद मिया वारसी की दरगाह में चंद मिनटों की आजमाइश के बाद मुझे मोहब्बत मिल गई। साथ ही हिदायत भी मिली और उस पर चलकर देवा शरीफ तक पहुंचने का रास्ता भी मिला।

वारिस अली शाह की दरगाह पर पहुंचकर मैंने अपने मन और हृदय में इस मामले में बदलावों की एक क्रांति देखी है। हाजी वारिस अली शाह के दरबार में मैंने जो कुछ देखा और महसूस किया, उसे मैं आईने के प्रतिबिंब में शब्दों में बयां नहीं कर सकता।

कविता के संदर्भों से ही नट लेखन की कविता के प्रति एक शुरुआती लगाव पैदा हुआ और थोड़े समय में ही इस विषय पर नटों के संग्रह की एक पुस्तक लिखना संभव हो गया।

यहाँ मेरी बुआ हज्जन से मुलाकात हुई मुरादन: यहाँ मुझे अपनी बुआ हज्जन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुरादन, जो उस समय भारत में रह रही

48

थीं। उनके माध्यम से, मैं हाजी वारिस अली शाह के माता-पिता और कुछ परिवार के सदस्यों की कब्रों पर जाने में सक्षम था, और यह मेरा सौभाग्य था कि मेरे लिए, हाजी वारिस अली शाह की दुर्लभ वस्तुओं का कमरा मेरे लिए खोला गया था ताकि मैं कमरे में उन वस्तुओं को देख सकूं।

वारिस पाक के सिलसिले में इस मामले में भी एक तारीफ़ किताब ज़रूर लिखनी चाहिए क्योंकि यह मुझ पर क़र्ज़ है। लेकिन 1987 में 'शम्स दुहा ' की तारीफ़ किताब के संकलन के बाद यह भावना बहुत बढ़ गई। आज मैं उस हिदायत की रोशनी में आ गया हूँ और इस स्थिति में पहुँच गया हूँ कि मैं अपनी तारीफ़ों के संग्रह ' हुज़ूर -ए- वारिस ' के नाम से अपनी 40 के लगभग शायरी के अंश पेश कर सकता हूँ और ये मनक़बतें शायरी, सोच और साहित्य की हैं और जो इसके मानक को बनाए रखती हैं। और इसकी समीक्षा इस मामले में आलोचक और प्रेम और भक्ति रखने वाले लोग करेंगे।

मैं हमारे पवित्र व्यक्ति अली का आभारी हूं सलीम गुल मोहम्मद वारसी मेरे गुरु और मेरे गुरु रशीद अंजुम और खास तौर पर अख्तर लखनवी के बहुत आभारी हैं, और उन्होंने न सिर्फ़ हुज़ूर वारसी के बारे में मनक़िबत में उल्लेखों के लिए अपनी शानदार राय लिखी है, बल्कि उन्होंने इस मामले में मेरी हौसला अफ़ज़ाई भी की है। और साथ ही हुज़ूर वारसी के जीवन के कुछ विवरणों का ज़िक्र करके और विस्तृत विवरण में कुछ घटनाओं को जोड़कर, और इस तरह से उन्होंने

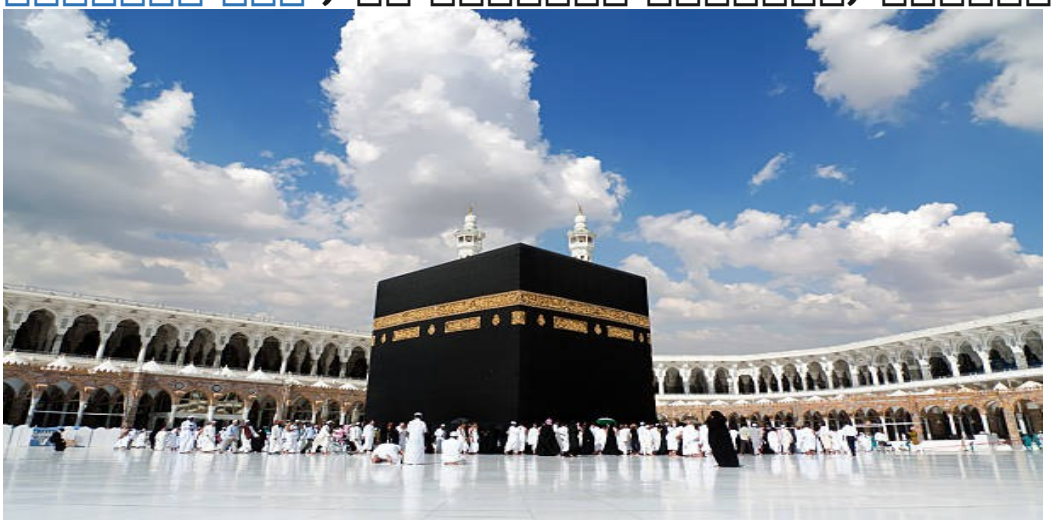

49

इस किताब " हुज़ूर -ए- वारिस " को एक मूल्यवान दस्तावेज़ी किताब बना दिया है।
क़मर वारसी

12 एल 446.ऑरंगी
कराची

फ़ोन 6659385

उर्दू पुस्तक " हुजूर -ए- वारिस " के कविता भाग से, मैंने पाठकों की पसंद और विकल्प के लिए अल्लाह और पैगंबर की प्रशंसा के दो नमूने, और उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद जोड़ा है।

प्रशंसा में, जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है।

50

इसमें संसार के रचयिता अल्लाह की प्रशंसा की गयी है।
लेकिन इस मामले में मेरे पास ऐसी कोई कला नहीं है। मुझे आपकी दया और कृपा की छाया चाहिए।
हे जगत के स्वामी, मैं गरीब और कमजोर हूँ।
इसमें बुद्धि की सभी चीजें और प्रकाश पाया जाता है।
जो धरती से लेकर आकाश के सभी स्तरों तक फैला हुआ है
हे प्रभु, आप एक हैं और ब्रह्माण्ड आपके अधीन है। कणों में प्रकाश है, और कलियों में भी प्रकाश है। हे हमारे दयालु प्रभु, आप खुले भी हैं और छिपे भी हैं।
हे दयालु प्रभु, उदासीनता आपका गुण है।
अतः मुझे अपनी कृपापूर्ण सुरक्षा प्रदान करें। मैं प्रार्थना करता हूं कि हर सांस में आपकी पुकार हो।
हे मेरे दयालु रब, क़मर को ऐसी ज़बान प्रदान करो।

मोहम्मद अब्दुल हफीज

51

मदीना के महान पैगम्बर की प्रशंसा में

मदीना में पैगम्बर मोहम्मद की कब्र
दासों के लिए उच्च वास्तविकता के पद की एक शैली है।
जैसे ही उन्होंने पैगम्बर की कमीज के किनारे जोड़े

52

यदि पैगंबर के पत्थर की गाद पर कोई नीचे है
क्या उस व्यक्ति के माथे के लिए कोई उच्च स्थान है?

वहाँ धरती, आकाश और लोटे का वृक्ष है।
उसके पैरों ने अन्य स्थानों को भी प्रकाशित कर दिया।

वे जीवन पायेंगे; कब्र के स्थान पर भरोसा रखो। निश्चय ही अन्तिम पैगम्बर के लिए भी ऐसा ही स्थान है।

मदीना में हर जगह रोशनी है ।
यह पद पैगम्बर का अनुसरण करने के लिए मिला था।

ऊंचे बगीचों और अधिकतर ऊंचे लॉन वाले स्थान मदीना के सभी स्थानों में महानता का एक स्तर है। मदीना के राजा से सम्पर्क नहीं टूटेगा।
इस प्रकार प्रशंसा के कवि को वहां अपना स्थान पता चल जाएगा

53

मोहम्मद अब्दुल हफीज

अंत .